दैनिक भास्कर
रविवार, 06 दिसंबर 2020 नोएडा

अगले जनम मोहे बिटिया ही दीजो...

गीतांजलि सक्सेना

वर्तमान सामाजिक परिवेश में बेटियों की सुरक्षा बेहद चिन्ता का विषय है। आज देश के हालात और जो माहौल है, वह अपने को पूर्णता असुरक्षित महसूस करती है। वह किसी भी रूप में महफूज नहीं है, यहाँ तक कि उन्हें अपने जन्मसिद्ध अधिकार से भी वंचित किया जाता है। उनका शोषण और उनकी पीड़ा बस चर्चा का विषय या सनसनीखेज घटना के रूप में सुर्खियों में छाई रहती है। कुछ दिन हो हल्ला, प्रदर्शन, रैली, कैनडिल मार्च आदि होता है और कुछ समय बाद सब अपनी सुविधानुसार भूल जाते हैं। यही कारण है सालों से हो रहे अनेक केस, चाहे निर्भया हो, ज्योति या दामिनी, या फिर कोई और..! इस पीड़ा को ... सिर्फ देश की बेटी का नाम देकर, उनकी हीन दशा को तमाशा बना कर याद करने का एक नया चलन ही शुरू हो गया है। हर शख्स अपनी जिम्मेदारी से सरेआम मुंह मोड़ लेता है और बहुत ही आसानी से रास्ता बदल देता है।

समय की विडंबना ही है कि आप की आंखों के सामने आये दिन देश की बेटियों के साथ वीभत्स घटनाएं घटित हो रही हैं। इस हकीकत व सच्चाई का सामना बेटियां करती आ रही हैं। हम एक दूसरे पर दोष अर्पण कर के, या सरकारी कानून व्यवस्था को सिर्फ दोषी करार करके, सुकन्या सुरक्षा के अभियान में तेजी नहीं ला सकते हैं। यह हम कैसे भूल जाते हैं कि जिसका शोषण हो रहा है, और जिसको अपमानित किया जा रहा है वह भी हमारा ही अंश है। हमें अपने स्तर पर डटकर हर सम्भव प्रयास करने होंगे। ऐसे में सामाजिक आंदोलन और सामाजिक मूल्यों को अधिक बढ़ावा देने के लिए जागरूकता अभियान को तेजी से चलाना होगा। उनकी मानसिकता पर चोट पहुंचाने वाले लोगों को किसी भी स्थिति में अनदेखा करना इस परिस्थिति में न्यायसंगत बिल्कुल नहीं हो सकता।

आज जहां एक ओर देश 21वीं सदी में अनेक सामाजिक, विज्ञान और अन्य क्षेत्रों में आधारभूत प्रगति कर चुका है, तो वहीं भारतीय समाज में आज नारी की स्थिति अत्यंत विरोधाभास में है, क्योंकि एक ओर उसे शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है, तो दूसरी ओर उसे बेचारी अबला नारी भी कहा जाता रहा है। सच तो ये ही है कि अतिवादी धारणाओं से नारी की स्वतंत्रता, विकास और सबसे अधिक उनकी सुरक्षा के

विडंबना / हकीकत

वर्तमान स्थिति में इस लड़ाई के समक्ष दुविधाएँ आना स्वाभाविक है, किंतु एक सच यह भी है कि समस्या की जटिलताओं में ही अनेक प्रश्न छुपे हुए हैं।

लिए उठाये गये कदमों से भी उन्हें अनेक तरह की बाधाओं का सामना करना ही पड़ता है।

आज जिस सामाजिक व्यवस्था की तस्वीर हम देख रहे हैं, जो कि लिंग भेदभाव पर निर्भर है, इसके दूरगामी परिणाम को पूरी तरह समझने की जरूरत है। यह हम कैसे भूल जाते हैं कि सदियों से भारतीय संस्कृति और इतिहास में नारी की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है और इसीलिए उन्हें अभिन्न रूपों में पूजा जाता है। भारत के इतिहास में उन्हें शूरवीर नारी के स्वरूप में भी याद किया जाता है। यही नहीं, शास्त्रों में बेटियों को आशीर्वाद देने की परम्परा भी रही है। ईश्वर ने सृष्टि रचना के दर्शन में नारी को ही शक्तिस्वरूप बनाया है, तो ऐसे में सवाल यह उठता है कि हम कैसे नया जीवन जीने के लिए लिंग के आधार पर, संसार चक्र को खतरे में डाल कर संतुलन बिगाड़ें। देश में इस संकट को सबसे बड़ी चुनौती के रूप में देखना चाहिए। आज इन परिस्थितियों में बेटी बचाओ की समस्या को अधिक गहराई से समझने और सोचने की जरूरत है। वर्तमान स्थिति में इस लड़ाई के समक्ष दुविधाएँ आना स्वाभाविक है, किंतु एक सच यह भी है कि समस्या की जटिलताओं में ही अनेक प्रश्न छुपे हुए हैं। इनके उत्तरों को ढूंढने के लिए हमें प्रेरित करती है। इन सभी विकल्पों की ओर पहल करना हम सब के हाथों में ही है।

1. वास्तविक सच्चाई को अनदेखा न करें। स्थिति की गंभीरता को दिल और दिमाग से समझने की जरूरत है। यह आरोप प्रत्यारोप का वक्त नहीं है।

2. बेटियों का अस्तित्व खतरे में है। उन्हें अपना जन्मसिद्ध अधिकार दिलाना हमारी नैतिक और भावनात्मक जिम्मेदारी है। तभी तो हमारी बेटियां सौभाग्य प्राप्त कर पायेंगी। यह लड़ाई कठिन जरूर है, पर नामुमकिन नहीं।

3. अपने जीवन में इस भावना या कामना को कभी भी वंचित न होने दे, तभी तो हमें बेटियों पर गर्व करने का अवसर प्राप्त होगा। इसे तर्क- संगत अनुभव करें। अपनी संतानों को सामान रूप से शिक्षा दें और अच्छे संस्कार देकर बड़ा करें। देश और आने वाले समाज का भविष्य बेटियों के कंधे पर हो, तभी शोभा देता है।

4. सरकार हो, समाज हो, गांव हो, परिवार हो या माँ बाप, सब को इस ओर कार्य करने के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी का पूर्ण अहसास होना जरूरी है।

5. लिंग अन्तर व्यवस्था के प्रति हमें बेहद संवेदनशील और अधिक जागरूक होने की आवश्यकता है। तभी तो हम सब मिलकर देश को इस प्राकृतिक असंतुलन संकट से बचा सकते हैं।

यह भी एक और सच है कि, कथनी और करनी का अन्तर दिन दुगना, रात चैगुना बढ़ता ही जा रहा है। समाज के हर तबके के लोगों की कथनी और करनी का फासला इस कदर बढ़ गया कि सिर्फ भाषणों में किए बड़े-बड़े वादों को पूरा करना सिर्फ घोषणा तक सीमित हो कर रह जाता है। यही वजह है कि दिल और दिमाग से निभाए गए कार्य भी करनी तक पहुंच ही नहीं पाते!

देश की बेटियों के उज्ज्वल भविष्य और आत्मनिर्भरता के लिए सरकार की नीयत पर शक न करें। सरकार द्वारा चलाई गई हर योजना का लाभ उठाएं। बेटियों की सुरक्षा के लिए हर सम्भव प्रयास का संकल्प करके इस ओर कार्य करने की पहल करें। विश्वास मानिए.. यह अनुभव आंतरिक शक्ति, शांति और बेहतरीन खुशी से परिपूर्ण है।

मौका तो दो, अजन्मी को, जीवन से पहले ही न मिटाना,
एक बार गले लगा लो, अपना के देखो, बेटा भी बन जाएगी,
इसी आंगन का फूल, अंश है तेरा, है यही पहचान उसकी,
वह बोझ नहीं, भविष्य है सब का, दो कुल की लाज हैं बेटियां,
हर रिश्ते निभाए बड़े शिद्दत से, हर को प्यार भरपूर,
अपनाकर देखो हर रूप में, है बिटिया आसपास हमारे,
सौभाग्य से मिलता अवसर, है ईश्वर का अतुल्य वरदान,
अगले जन्म मोहे बिटिया ही दीजो...